B.S.N.V. P.G. College, Charbagh Lucknow

Department of History (MIH)

B. A. PART – III (HISTORY) Semester- V Session 2020-21 Paper-III A

Syllabus

(A) : Socio-Cultural and Economic History of India (1206 AD – 1739) AD

Unit –I

1. Prominent Historians of the Sultanate Period: (i) Ziauddin Barni (ii) Amir Khusrau (iii) Isami (iv) Shams i- Siraj Afif, 2. Prominent Historians of the Mughal Period: (i) Abul Fazl (ii) Badauni (iii) Abdul Hamid Lahori (iv) Khafi Khan

UNIT – II

1. Society in Medieval India 2. Status of Women 3. Bhakti Movement 4. Sufi Movement 5. Religious Policies of the Rulers: (i) Mohammad bin Tughlaq, Firuz Shah (ii) Akbar, Aurangzeb

UNIT- III

1. Economic Policies of the Rulers: (i) Alauddin Khalji: Land Revenue Policy and Market Reforms (ii) Mohammad bin Tughlaq: Land Revenue Policy (iii) Land Revenue Revenue Reforms of Sher Shah and Akbar 2. Taxation: Jaziya, Zakat, Khums 3. Growth and Development of Trade from 16th to17th century

UNIT- IV

Cultural Development: 1. Growth of Painting 2. Development of Music 3. Major Monuments of the Sultanate Period 4. Major Monuments of the Mughal Period

Books Recommended

1. S.A. A. Rizvi -The Wonder that was India part -2
2. R. C. Majumdar -The History and Culture of Indian People
4. Yusuf Hussain - Glimpses of Medieval Indian Culture
5. gfj'pUn z oekZ & e/;dkyhu Hkkjr Hkkx&1] 2
6. B. N. Lunia - Evolution of Indian Culture
7. U. N. Dey - Medieval Culture
8. P. N. Chopra, V.N. Puri, M.N.Das - Social, Economic & Cultural History of India - Vols I, II & III
9. pksiM+k] iqjh] nkl & Hkkjr d s lekftd vkfFkZd vkSj lkaLd`frd bfrgkl& Vols I, II & II
10. A. L. Srivastava - Social, Economic & Cultural History of Medieval India
11. K. M. Ashraf - Society and Culture in Medieval India
12. K.M.Ashraf - Life and Condition of the People of Hindustan
13. Percy Brown - Indian Architecture Islamic Period

Dr. Nilima Gupta
Associate Professor

Lecture on Ziauddin Barni

जियाउद्दीन बरनी

सलनतकलीन इतिहासकारों में जियाउद्दीन बरनी को तुग्लककलीन भारत का प्रमुख इतिहासकार होने का गौरव प्राप्त है। जियाउद्दीन बरनी बरन (आधुनिक बुलन्दशहर,

उत्तरप्रदेश) का निवासी था।उसके जन्म तिथि के बारे कहीं नहीं लिखा मिलता। तारीखेफीरोजशाही में लिखे विवरण से अनुमान लगाया जाता है कि उसका जन्म 684 हिजरी (1285 ई) में हुआ था। सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी ने बरन (आधुनिक बुलन्दशहर) नायब चुना था। बरन से ही उसका नाम बरनी पड़ा

बरनी की शिक्षा दीक्षा उच्च स्तर पर हुई थी। बरनी ने दिल्ली सल्तनत कि तीन पीढ़ियों की सेवा की थी। मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में वह 17 वर्षों तक नदीम के पद पर सेवा की।उसकी मृत्यु शेख़ निजामुद्दीन औलियाके खानकाह में संभवतः 1359 में हुई । अलाउद्दीन ख़िलजी और उसके उत्तराधिकारी के शासनकाल में उसने वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत किया।उसका अधिकतर जीवन लेखन में गुजरा ।अमीर खुसरो व अमीर खुसरो व अमीर हसन जैसे विद्वान उसके मित्र थे। बरनी ने अपनी रचनाओं की संख्या का उल्लेख नहीं किया है। अमीर खुर्द की रचना - सियरुल औलिया में बरनी द्वारा रचित **<u>6 पुस्तकों का उल्लेख मिलता है-</u>**

1- सनाय मुहम्मदी
2- सलाते कबीर
3- इनायतनामा ए इलाही
4- मआसिर सादात
5- तारीखे फीरोजशाही
6- हसरतनामा

अमीर खुर्द संभवतः बरनी की दो अन्य रचनाओं से परिचित नहीं था – फ़तवाहे जहांदारी , और तारीखे बरमकियान । अब केवल तीन पुस्तकें प्राप्त है-

तारीखे फीरोजशाही -

तारीखे फीरोजशाही पुस्तक बलबन के राज्यारोहण से लेकर सुल्तान फिरोजशाह तुगलक के 6 बरसों का इतिहास जानने का प्रमुख स्रोत है।इस ग्रन्थ का आरम्भ बलबन के राज्यारोहण से होता है। बलबन की नीतियों , दरबारीवैभव,इस्लाम धर्म पर बलबन के विचार व नीति का वर्णन किया गया है। शासनकाल में होने वाले विद्रोह,अमीरों ,

मलिकों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उसने बलबन के उतराधिकारियों के उत्थान – पतन का विस्तृत वर्णन किया है।

सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के गुणों की प्रशंसा की है बरनी के अनुसार सुल्तान शान्त प्रकृति का सत्यवादी सुल्तान था।उसने कलाकारों,कवियों और लेखकों को राज्य में संरक्षण दिया था। बरनी द्वारा अलाउद्दीन ख़िलजी का विवरण दिया है विश्वसनीय है लेकिन दरबार व हरम के विवरणों पर संदेह किया का सकता है। बरनी ने समकालीन हिन्दुओं के सामाजिक स्थिती का बड़ा दयनीय वर्णन किया है उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि बरनी हिंदुओं से बहुत घृणा करता था। अफ़सार बेगम के अनुसार – जब वह हिन्दुओं से सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत करे तो बरनी विश्वास योग्य नहीं है।

बरनी ने गियासुद्दीन तुगलक के शासन प्रबन्ध की बड़ी प्रशंसा की है। बरनी ने गियासुद्दीन तुगलक की दानप्रियता की बढ़ – चढ कर प्रशंसा की है। सुल्तान के मृत्यु के संदर्भ में विवरण सन्तोष जनक नहीं है। उसकी मृत्यु को मात्र दुर्घटना माना है।

बरनी मुहम्मद तुगलक को विरोधाभास गुणों से युक्त मानता है। सुल्तान की 6 योजनाओं का वर्णन किया है-

1- दोआब में कर- वृद्धि।
2- राजधानी परिवर्तन ।
3- ताबें की मुद्रा ।
4- , खुरासान विजय ।
5- सैनिकों की भर्ती।
6- कराजिल का आक्रमण ।

बरनी ने इन योजनाओं का उल्लेख क्रम से नहीं किया है। जबकि पांचवी और छ्ठी योजना एक ही है।बरनी ने तिथियों के प्रति अरुचि दिखाई है।

बरनी ने फिरोज तुगलक़ के शासन का 6 वर्षों का इतिहास का विवरण 11 अध्यायों में दिया है।सुल्तान फिरोज तुगलक की अत्यंत प्रशंसा की है। सुल्तान के सार्वजनिक निर्माण कार्यों – नहर खुदवाने , कृषि की उन्नति, भवन निर्माण की बड़े उत्साह से वर्णन किया है। सुल्तान के राजकीय अधिकारी – खान - ए- जहां मकबूल तातार खां ,इफ्तखार खां (गुजरात का गवर्नर) महमूद बेग, और शेर खां की बड़ी प्रशंसा की है।

तारीखे फीरोजशाही में अनेक कमियां हैं जैसे तिथिक्रम का अभाव ,अंधधार्मिक्ता ,प्रमुख घटनाओं को घुमा फिरा कर प्रस्तुत करना, हिन्दुओं के लिए दुराग्रह आदि,इसके बावजूद यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ है,उसकी तुलना में कोई अन्य ग्रन्थ नहीं ठहरता ।

Lecture on Ziauddin Barni to be continue …